Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 10 | Issue : 4 | April 2024

# बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन' (कानपुर जिले के संदर्भ में)

**डॉ. विनीता[1], उम्मेद सिंह[2]**

[1] (शोध निर्देषिका) प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ
[2] (शोधार्थी) शिक्षा विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ

## ABSTRACT

शिक्षा ही व्यक्ति में आत्मविश्वास आत्म चिंतन को पैदा करती है तथा उसमें विवेकशीलता, तर्कशीलता, निर्णय शक्ति का विकास करती है। अतः समाज के प्रत्येक स्तर पर व व्यक्ति के लिए शिक्षा हासिल करने की जरूरत विकासशील देश व समाज हेतु आवश्यक मानी गई है। शिक्षा द्वारा मनुष्य के भीतर एक विस्तारित दृष्टी विकसित होता है। जिससे वह जीवन की समस्त घटनाओं को एक विस्तृत दृष्टीकोण से देख सकता है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक का मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास संभव हो सकता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक के अंदर समाहित असीम संभावनाओं का विकास करना है। शिक्षा द्वारा बालक की योग्यता क्षमता, रुचि तथा अंतर्निहित गुणों का इस प्रकार से विकास करना है कि वे समाज में एक प्रतिष्ठित नागरिक के रूप में अपने आप को स्थापित कर सकें। इस शोध अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि के माध्यम से कानपुर जिले के विभिन्न स्व–वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के 600 बी.एड. के विद्यार्थियों का चयन किया है। जिसमें पाया कि उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में 'शिक्षण अभिक्षमता, भाषा दक्षता के प्रति ज्ञान सम्मिलित रूप से महिला एवं पुरूष वर्ग के के बी.एड. विद्यार्थियों के समूह में तुलनात्मक रूप में लगभग समान पाया गया है परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षण कौशल सम्बंधी 'शिक्षण अभिक्षमता' जैसे गुणों के प्रति ऐसे गुणों के संयोग जिनसे कुछ विशिष्ट ज्ञान एवं संगठित अनुक्रियाओं की कुशलता में महिला बी.एड. विद्यार्थी एवं पुरूष बी. एड. विद्यार्थियों के समूह की तुलना में कम अन्तर पाया गया है इसलिए कहा जा सकता है कि कार्य कुशलता की योग्यता सम्बंधी 'शिक्षण अभिक्षमता' के प्रति कुशलता एवं योग्यता का ज्ञान दोनों ही विद्यार्थियों के समूह में समान ही है क्योंकि दोनों विद्यार्थियों के समूह में उनका शैक्षिक स्तर व शैक्षणिक समानता तथा शैक्षणिक संसाधनों का समान वितरण, योग्य और अनुभवी शिक्षक की आयु, गुणवत्ता, परिपक्वता एवं सामाजिक एवं राजनैतिक हस्तक्षेप व नेतृत्वता का गुण व भागीदारी अधिक होने तथा नवीनतम् प्रौद्योगिकी की समान उपयोगिता के कारण 'शिक्षण अभिक्षमता' के लिये कौशल प्राप्ति की ज्ञान की अभिलाषा से शिक्षको में अधिक ज्ञान होना एवं निपुणता का होना व पेशेवर प्रतिबद्धता का होना विकासात्मक अवधारणा में उनके अध्ययन, अध्यापन के लिए दोनों समूह को ज्ञान के प्रति से वर्तमान शिक्षा प्रणाली, उनके अध्यापन शिक्षण विषयों में समावेश पाठ्यक्रम व उनकी अकादमिक विषयों के अध्ययन व अध्यापन में विशेषज्ञता एवं शैक्षिक सफलता या दक्षता में बहुत ही कम अन्तर होने को स्पष्ट करता है अतः नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का समान उपयोग करने के कारण दोनों समूह में कुछ विशेष परिस्थितियों को छोडकर समान 'शिक्षण अभिक्षमता' एवं भाषा दक्षता पाई गई है।

**KEYWORDS:** शिक्षण अभिक्षमता, भाषा दक्षता तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता, संवेगात्मक बुद्धि, अध्यापक शिक्षा, एन.ई.पी.– 1986 व 1992, 2020

**प्रस्तावनाः**

शिक्षा आजीवन चलने वाली एक सतत् एवं विकासात्मक प्रक्रिया है। व्यक्ति जीवन के प्रत्येक अनुभव से कुछ न कुछ शिक्षा प्राप्त कर आने वाले जीवन को परिमार्जित करता है। बालक का मानस पटल धीरे–धीरे अपने मूल प्रवृत्तियों को समायोजित कर भौतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण से सही रूप में सामंजस्य स्थापित करता है और बदलते हुए वातावरण के साथ तारतम्य स्थापित करता है। शिक्षा द्वारा बालक की अन्तर्निहित क्षमताओं तथा जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है, उनका प्रकटीकरण किया जाता है ताकि वह शिक्षित व सुसंस्कृत होकर समाज के उत्थान में अपना योगदान दे सके। शिक्षा वह प्रकाश है जो जीवन के समस्त अन्धकार को दूर करके बालक में पवित्र संस्कारों, भावनाओं, निश्चित दृष्टिकोण और भावी विचारों को जन्म देती है जिससे बालक के समस्त जीवन का विकास प्रकाशित होता है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्र एवं स्वस्थ एवं मौलिक चिंतन का आधार निर्मित किया जाता है। शिक्षक का स्थान समाज में हमेशा से ही अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था में उच्चतम आदर्शों का ह्रास हुआ है तथा सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण हो चुका है। यह एक सर्वमान्य सत्य है कि शिक्षा प्रणाली की सफलता के लिए शिक्षक की शैक्षिक प्रतिबद्धता एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण आयाम होता है। सभी विवेचनाओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र को समर्पित सभी शिक्षा आयोगों ने अंध्यापक की वास्तविकता को दृष्टीपटल पर रखा है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षण को व्यवसाय के रूप में माना जाना आवश्यक हो गया है और हमें भी इस सत्य को स्वीकार करते हुए शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना ही होगा। तथा इस शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भी बालकों में सर्वागीण विकास जैसे कौशल विकास, सामाजिक मूल्यों की पुर्नस्थापना हेतु बहुत परिवर्तन किया गया है। शिक्षक अपनी कर्तव्य निष्ठा, उत्तरदायित्व एवं व्यवसायिक प्रतिबद्धता द्वारा छात्रों में संवेगात्मक बुद्धि तथा अनुभूति का विकास कर सकते हैं। अध्यापक सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र होता है। वह सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया की श्रृंखला में महत्वपूर्ण एवं निर्णायक भूमिका निभाता है भारतीय जन मानस में प्राचीन काल से गुरू को बहुत उच्च स्थान प्रदान किया है। उसकी तुलना ईश्वर से की जाती है।

**गुरूब्रहाः गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वर ः।**
**गुरू साक्षात् पर ब्रहा तस्मै श्री गुरूवे नमः।।**

अथार्त शिक्षक सृजक है, कायम रखने वाला है और पूर्णतया उदार है।

**''विद्यास्तं जनयति तच्छेव जन्म। शरीरमेव मातापितरो जनमतः ।।''**

अर्थात माता–पिता तो बालक के षरीर को पैदा करते हैं, परन्तु आचार्य उस बालक को विद्या से जन्म देता है। यदि शिक्षक को अपना यह स्थान बरकार रखना है और अपने कार्य में शंतुष्टि प्राप्त करनी है तो उसे छात्रों के सर्वागीण विकास के बारे में लगातार सोचना होगा और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक योग्यताएँ, दक्षताएँ, कौशलता, व्यवसायिक प्रतिबद्धता, शिक्षण अभिक्षमता, भाषा दक्षता एवं सांवेगिक बुद्धि आदि गुण स्वयं में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण रूप में विकसित करने होगें

अध्यापक शिक्षा का अर्थ भावी एवं सेवारत अध्यापकों के सर्वांगीण विकास से है। यह भावी एवं सेवारत अध्यापकों के लिए उनकी शिक्षण प्रक्रिया में सुधार तथा उनकी तकनीकी क्षमताओं का विकास करती है। निःसन्देह किसी देश के विकास में अध्यापक शिक्षा की अहम् भूमिका है। अतः शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए सर्वप्रथम अध्यापकों में शिक्षण अभिक्षमता, दक्षता, व्यावसायिक प्रतिबद्धता एवं अध्यापक में मानवीय मूल्यों का विकास करना होगा।

### 1.2. समस्या का प्रादुर्भावः

प्रस्तुत शोध अध्ययन शिक्षा व्यवस्था की इन्हीं विसंगतियों के अध्ययन हेतु 'बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन' (कानपुर जिले के संदर्भ में) है। शोधार्थी षालूजा, लवीना (2022) ने व्यवसायिक तनाव और भूमिका सघर्ष के सम्बंध में शिक्षक प्रशिक्षकों के बीच व्यवसायिक प्रतिबद्धता का एक अध्ययन किया जिसमें पाया कि शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए, हमें न केवल यह देखना चाहिए कि किस प्रकार के छात्रों का चयन किया जाता है, बल्कि यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि भविष्य के शिक्षकों को तैयार करने के इस पवित्र कार्य के लिए सक्षम और प्रतिबद्ध शिक्षक प्रशिक्षकों को उचित स्थान दिया जाए। शर्मा आर. सी. (1984) ने पाया कि शिक्षण योग्यता, बौद्धिक स्तर और भावी शिक्षकों की नैतिकता का सकारात्मक सम्बंध होता है। शोधार्थी का ऐसा मानना है और अनेकानेक शोधों एवं अनुसंधानों से यह स्पष्ट हो चुका है कि यदि हम शिक्षक प्रशिक्षुओं को पूर्ण रूप से प्रशिक्षित कर अगर उनमें शिक्षण अभिक्षमता तथा व्यवसायिक प्रतिबद्धता, एवं सांवेगिक बुद्धि का विकास कर सकेंगे तो निश्चित तौर पर वे अपनी कक्षा में मानसिक रूप से समृद्ध जाकर सर्वश्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान करेंगे। शिक्षक ही समाज में सामाजिक चेतना का प्रचार प्रसार कर सकता है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में शिक्षा के माध्यम से स्वतंत्र एवं स्वस्थ एवं मौलिक चिंतन का आधार निर्मित किया जाता है। अध्यापक के निर्देषन के अभाव में छात्र ज्ञानार्जन नहीं कर सकता है। विषय सामग्री के प्रस्तुतीकरण में तथा शिक्षा प्रकिया को लक्ष्य प्रदान करने में भी अध्यापक का ही प्रमुख स्थान होता है।

### 1.3. समस्या का कथन

'बी0ए0. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन' (कानपुर जिले के संदर्भ में)

### 1.4. शोध अध्ययन का महत्वः

पूर्व में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, 1992 व नयी शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के अनुसार अब सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को और परिमार्जित किया जाना है। नयी शिक्षा नीति बी.एड. पाठ्यक्रम में ही नहीं बल्कि अन्य पाठ्यक्रम में भी आमूलचूल परिवर्तनों को लागू करने के लिए कटिबद्ध है। तथा छात्र केन्द्रित व्यवस्था के साथ–साथ बहुविषयक अध्ययन तथा बहुकौशल के साथ सर्वागीण विकास करना है इसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु बी.एड. कार्यक्रम में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षुओं के शैक्षणिक योग्यता के विकास के साथ साथ उनमें व्यवसायिक प्रतिबद्धता, शिक्षण अभिक्षमता तथा भाषा दक्षता का विकास सांवेगिक बुद्धि के अनुकूल किया जा सके और शिक्षकों के प्रति देश, राष्ट्र विकास भावना की सोच को लेकर परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा सकेगा।

### 1.5. शोध के उद्देश्यः

- लिंग भेद के आधार पर बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता, भाषा दक्षता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण क्षमता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
- बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता तथा भाषा दक्षता का सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

### 1.6 परिकल्पनाः

**प्रथम भाग**

- महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**द्वितीय भाग**

- उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

### 1.7. अध्ययन की परिसीमाऐंः

- शोधार्थी द्वारा शोध हेतु जनपद कानपुर जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के समन्वित रूप से विभिन्न शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत पुरुष तथा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है।
- शोधार्थी द्वारा शोध के चरों के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षुओं के समुचित अध्ययन की सुविधा समय सीमा के भीतर करने की कोशिश हेतु 600 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन परस्पर सहमति से किया गया।
- शोधार्थी द्वारा शोध हेतु शिक्षक प्रशिक्षुओं के समुचित अध्ययन के लिए समेकित रूप से बी.एड. के गैर सरकारी (स्ववित्त पोषित) महाविद्यालय तक ही सीमित किया गया।

### 1.8. प्रयुक्त शोध विधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में यादृच्छिक विधि एवं सप्रयोजन विधि का चयन करते हुए न्यादर्श हेतु जनपद कानपुर जिले के विभिन्न स्व–वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों को चुना गया है। जिसके अन्तर्गत न्यादर्शीकरण अधोलिखित सारणी में किया गया है।

### 1.9 प्रस्तुत शोध अध्ययन का न्यादर्शः

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श के रूप में प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या का शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि के माध्यम से कानपुर मंडल के विभिन्न स्व–वित्तपोषित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के 600 बी.एड. के विद्यार्थियों का चयन किया है। न्यादर्श प्रदर्षित करती सारणी का प्रारूप निम्न है।

| उच्च सांवेगिक वाले बी0एड0 केविद्यार्थी 300 | | निम्न सांवेगिक वाले बी0एड0के विद्यार्थी 300 | |
|---|---|---|---|
| पुरुष | | महिला | |
| 150 विद्यार्थी | 150 विद्यार्थी | 150 विद्यार्थी | 150 विद्यार्थी |
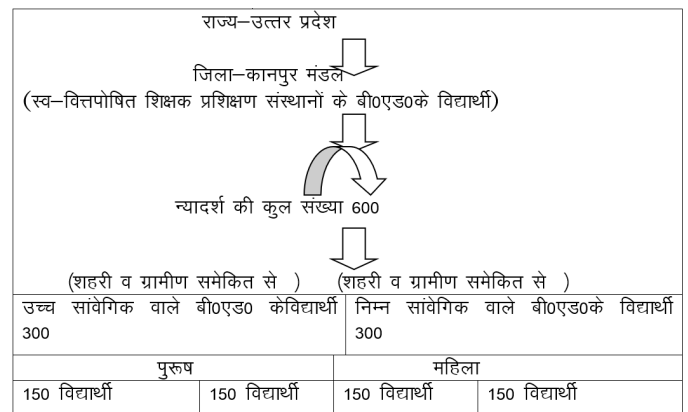
सारणी–1.1

### 1.10 प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रशासित शोध उपकरणः

- शोधकर्ता ने प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा संवेगात्मक बुद्धि के अध्ययन हेतु डॉ अरुण कुमार एवं श्रुति नारायण के द्वारा रचित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण (ई.आई.एस )चुना गया।
- शिक्षण अभिक्षमता के परीक्षण के लिए डॉ. एस.सी.गाखर एवं डॉ. रजनीष द्वारा रचित मानकीकृत शिक्षण अभिक्षमता मापनी (टी0ए0टी0–जी0आर0) का चयन किया गया।

### 1.11 सांख्यिकीः

मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी–परीक्षण – प्रस्तुत शोध अध्ययन में संवेगात्मक बुद्धि के अध्ययन के लिए संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण व मानकीकृत व्यवसायिक प्रतिबद्धता मापनी परीक्षण, प्रष्नावली के विभिन्न आयामों के परीक्षण के सन्दर्भ में अलग–अलग आरेख आयत चित्रों में विश्लेषण को प्रदर्षित हेतु पुरूष एवं महिला बी.एड.के विद्यार्थियोंको जो विभिन्न परिकल्पनानुसार उनके सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त मध्यमान एवं प्रमाप विचलन को आयत चित्र द्वारा प्रदर्षित किया गया है।

### 1.12 अर्थापन एवं विश्लेषणः

1.1. परिकल्पना–महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला विद्यार्थी | 300 | 26.43 | 18.32 | 1.058 | 1.606 | असार्थक | स्वीकृत |
| पुरूश विद्यार्थी | 300 | 24.66 | 4.99 | 0.288 | | | |

df=600–2=598 एवं 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96

सारणी संख्या –1.1

लिंग भेद आधारित बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख
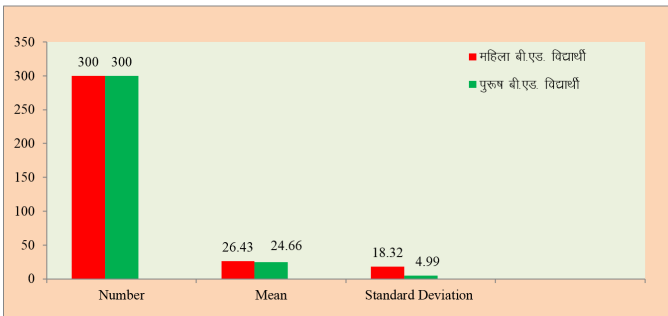
आरेख संख्या –1.1

### विश्लेषण एवं व्याख्याः

प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.1 में महिला बी.एड. विद्यार्थी एवं पुरूष विद्यार्थियों में 'शिक्षण अभिक्षमता' के सम्बंध में अध्ययन पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि महिला बी.एड. विद्यार्थी समूह का मध्यमान 26.43, मानक विचलन 18.38, तथा मानक त्रुटि .375, पायी गयी है। पुरूष बी.एड. विद्यार्थी के समूह का मध्यमान 24.66, मानक विचलन 4.99, मानक त्रुटि .414, पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 1.606, पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 598 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.96 से कम है जो अन्तर की सार्थकता को प्रमाणित नहीं करता है। अतः परिकल्पना महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है पाया जाता है। अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

### 1.2 परिकल्पना

महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला बी.एड. विद्यार्थी | 300 | 228.22 | 21.16 | 1.28 | 1.523 | असार्थक | स्वीकृत |
| पुरूश बी.एड. विद्यार्थी | 300 | 225.22 | 22.18 | .288 | | | |

df=600–2=598 एवं 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96

सारणी संख्या 1.2

लिंग भेद आधारित बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी –
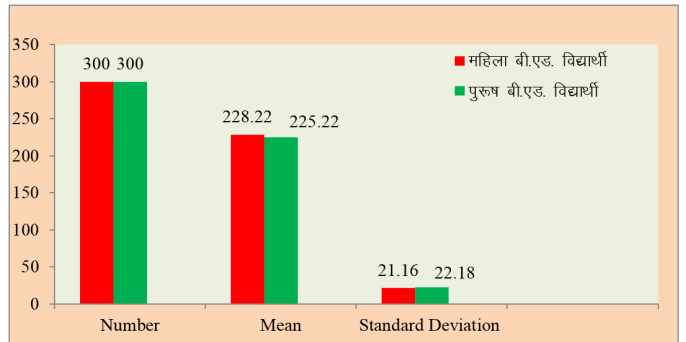
आरेख संख्या 1.2

लिंग भेद आधारित बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख–

### विश्लेषण एवं व्याख्या –

प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.2 में महिला बी.एड.. विद्यार्थी और पुरूष बी. एड. विद्यार्थियों के समूह में भाषायी कुशलता सम्बन्धी 'भाषा दक्षता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि महिला बी.एड. विद्यार्थी समूह का मध्यमान 228.22, मानक विचलन 21.16 तथा मानक त्रुटि 1.280 पायी गयी है। पुरूष बी.एड. विद्यार्थी समूह का मध्यमान 225.46, मानक विचलन 22.18 तथा मानक त्रुटि .288 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 1.523 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 598 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 1.96 से कम है जो अन्तर की सार्थकता को प्रमाणित नहीं करता है अतः परिकल्पना महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

### 1.3 परिकल्पनाः

महिला एवं पुरूष वर्ग के बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या– 1.3

लिंग भेद आधारित बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी–

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| महिला एवं पुरूश बी.एड. विद्यार्थी (षिक्षण अभिक्षमता) | 600 | 26.19 | 20.38 | .832 | 164.81 | सार्थक | अस्वीकृत |
| महिला एवं पुरूश बी.एड. विद्यार्थी (भाशा दक्षता) | 600 | 226.84 | 21.70 | .886 | | | |

df=450–2=598 एवं 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96
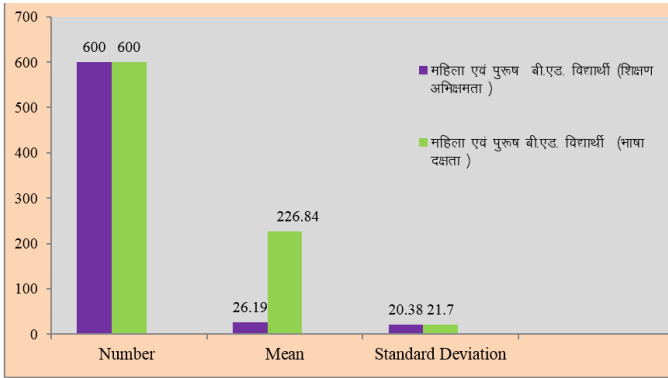
आरेख संख्या– 1.3
लिंग भेद आधारित बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख–

**विश्लेषण एवं व्याख्याः**
प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.3 में बी.एड्. के महिला और पुरूष विद्यार्थियों के सम्मिलित समूह में शिक्षण कार्य और शिक्षण सिद्धान्त तथा उसकी विधियों के अभिविन्यास में अभिरूचि एवं भाषायी दक्षता सम्बन्धी 'शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि बी.एड्. महिला एवं पुरूष विद्यार्थी के समूह ;शिक्षण अभिक्षमताद्ध का मध्यमान 26.19, मानक विचलन 20.38 तथा मानक त्रुटि 0.832 पायी गयी है। बी.एड. महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों के समूह; भाषा दक्षताद्ध का मध्यमान 226.84, मानक विचलन 21.70 तथा मानक त्रुटि 0.886 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 164.811 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 598 के 0.05 स्तर पर टी के प्राप्त मूल्य 1.96 से कॉफी अधिक है जो अन्तर की सार्थकता को प्रमाणित करता है अतः निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

**1.4 परिकल्पनाः**
उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या – 1.4
सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी–

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च सांवेगिक बुद्धि(महिला एवं पुरूष विद्यार्थी) | 300 | 52.30 | 4.29 | .248 | 17.64 | सार्थक | अस्वीकृत |
| निम्न सांवेगिक बुद्धि (महिला एवं पुरूष विद्यार्थी) | 300 | 44.81 | 6.022 | .347 | | | |

df–298 पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96
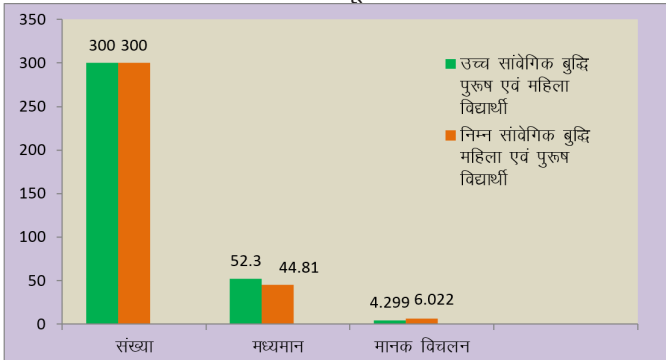
आरेख संख्या – 1.4
सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पर सांख्यिकीय आरेख–

**विश्लेषण एवं व्याख्याः**
प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.4 में उच्च सांवेगिक एवं निम्न बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों के 'शिक्षण अभिक्षमता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले महिला एवं पुरूष बी.एड. विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 52.30, मानक विचलन 4.29 तथा मानक त्रुटि 0.248 पायी गयी है। निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों के महिला एवं पुरूष समूह का मध्यमान 44.81, मानक विचलन 6.022, तथा मानक त्रुटि .347 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 17.64 पाया गया जो स्वतंत्रता के अंष 298 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.97 से अधिक है जो अन्तर की सार्थकता की पुष्टि करता है। अतः संदर्भित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

इसलिए कहा जा सकता है कि शिक्षण की योग्यता सम्बंधी 'शिक्षण अभिक्षमता' के प्रति जागरूकता दोनों बी.एड. छात्र एवं छात्राओं के समूह में उच्च सांवेगिक बुद्धि तथा निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में समान नहीं है क्योंकि बी.एड. विद्यार्थी हों या सामान्य विद्यार्थी सभी में व्यक्तिगत विभिन्नता पाया जाना सामान्य बात है तथा सामान्यतः जो बालक संवेगात्मक रूप से परिवक्व होगा वह शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके अच्छे परिणाम देखने को मिलते है।

**1.5 परिकल्पनाः**
उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

| समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च सांवेगिक बुद्धि (महिला एवं पुरूष विद्यार्थी) | 300 | 252.57 | 22.57 | 1.303 | –2.917 | असार्थक | स्वीकृत |
| निम्न सांवेगिक बुद्धि (महिला एवं पुरूष विद्यार्थी) | 300 | 253.62 | 22.42 | 1.294 | | | |

df–298 पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96

सारणी संख्या– 1.5
सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी–
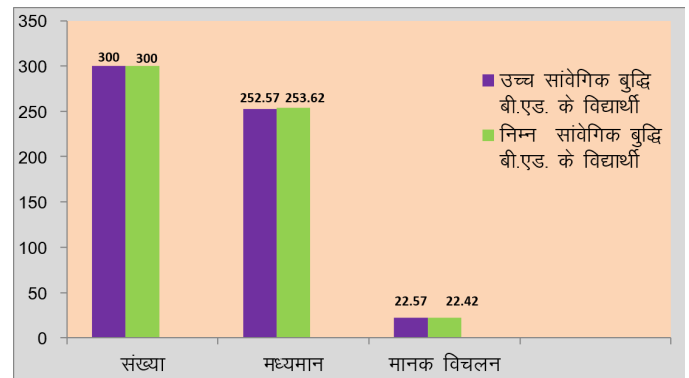
आरेख संख्या– 1.5
उच्च एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख–

**विश्लेषण एवं व्याख्याः**
प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.5 में उच्च एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों के 'भाषा दक्षता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 252.57, मानक विचलन 22.57 तथा त्रुटि 1.303 पायी गयी है। निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों समूह का मध्यमान 253.62, मानक विचलन 22.42, मानक त्रुटि 1.294 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी

परीक्षण मूल्य –2.917 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 598 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.96 से काफी कम है जो अन्तर की सार्थकता प्रमाणित नहीं करता है। अतः उपयुक्त परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

आंकड़ों के विश्लेषण के पष्चात कहा जा सकता है कि भाषायी कौशल सम्बंधी ''भाषा दक्षता'के प्रति ज्ञान दोनों उच्च सांवेगिक बुद्धि एवं निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के छात्र एवं छात्रा समूह में बिलकुल समान है क्योंकि दोनों ही अध्ययन व अध्यापन अपनी मातृ भाषा में ही करते हैं अतः भाषा के सभी कौशलों (सुनना, बोलना, पढना और लिखना) का समुचित विकास होने पर ही बच्चों के मस्तिष्क में स्पष्टता, मननशीलता, अपनी मौलिकता आती है और तभी बच्चों की लेखनी में सम्पूर्ण अभिव्यक्ति झलकती है। यह स्तर उनमें उच्च स्तर तक बना रहता है ।

**1.6 परिकल्पनाः**

**सारणी संख्या– 1.6**
**उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों के शिक्षण अभिक्षमता पर सांख्यिकीय सारणी–**

| उच्च सांवेगिक बुद्धि समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बी0एड0 पुरूष विद्यार्थी | 150 | 52.94 | 4.23 | 0.3457 | 2.521 | सार्थक | अस्वीकृत |
| बी.एड. महिला विद्यार्थी | 150 | 51.66 | 4.28 | 0.3496 | | | |

df–298 पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96
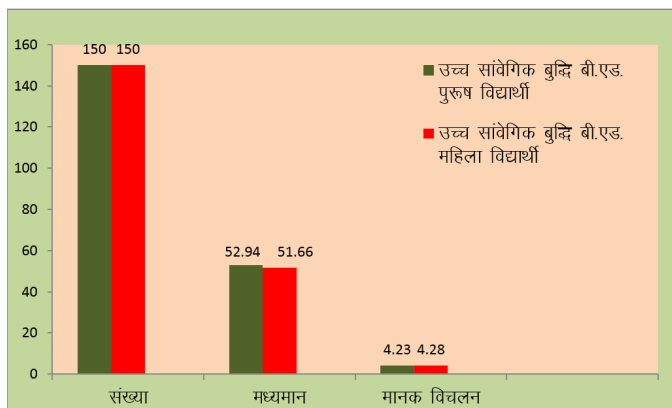
**आरेख संख्या– 1.6**
**उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पर सांख्यिकीय आरेख–**

**विश्लेषण एवं व्याख्याः**
प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.6 में उच्च सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में बी.एड. के विद्यार्थियों की'शिक्षण अभिक्षमता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों पुरूष समूह का मध्यमान 52.94, मानक विचलन 4.23 तथा मानक त्रुटि 0.3457 पायी गयी है।उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों महिला समूह का मध्यमान 51.66, मानक विचलन 4.28 तथा मानक त्रुटि 0.3496 पायी गयी है। दोनों समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 2.521 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 298 के 0.05 स्तर पर टी के सारणी मूल्य 1.97 से अधिक है जो अन्तर की सार्थकता प्रमाणित करता है। अतः उपयुक्त परिकल्पना सामान्य रूप से अस्वीकृत की जाती है।

परिणामस्वरूप कहा जा सकता है कि शिक्षण कौशल सम्बंधी 'शिक्षण अभिक्षमता' के प्रति जागरूकता पुरूष तथा महिला समूह में समान नहीं पाया गया है क्योंकि शिक्षण व्यवसाय महिलाओं के लिए सुविधाजनक है तथा पुरूष वर्ग में विविध कार्यबल, निर्णय लेने की प्रक्रिया को बढाता है फिर भी प्राथमिक शिक्षक की भूमिका के रूप में एक महिला बेहतर मानी जाती है तथा शिक्षा व संस्कृति का ज्ञान व महिलाओं के पक्ष में सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना करना, सांस्कृतिक मंच को उपलब्ध करवाना व राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक एवं सर्वांगीण विकास के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन तथा दोनों समूह को असमान अवसर एवं महिलाओं को सांस्कृतिक एवं धार्मिकता के प्रति अधिक रूचि होना व अधिक अवसर प्रदान करना तथा उनमें संदर्भित पत्रिकाओं में महिलाओं से सम्बन्धित लेखों को पढ़कर ज्ञान प्राप्त करना आदि से उनके अध्ययन शिक्षण विषयों में समावेश सांस्कृतिक व सामाजिक विश्लेषण अवधारणा का पाठ्यक्रम व नवीनतम ज्ञान प्राप्ति के संचार के साधनों का असमान उपयोग करने के कारण शिक्षण व्यवसाय सम्बंधी 'शिक्षण अभिक्षमता' के प्रति दोनों महिला एवं पुरूष समूह में समान जागरूकता नहीं पायी गयी है।

**1.7 परिकल्पनाः**
निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

| निम्न सांवेगिक बुद्धिसमूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरूष बी.एड. विद्यार्थी | 150 | 44.10 | 6.31 | 0.5159 | –2.087 | असार्थक | स्वीकृत |
| महिला बी.एड. विद्यार्थी | 150 | 45.33 | 5.64 | 0.4605 | | | |

df–298 पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96
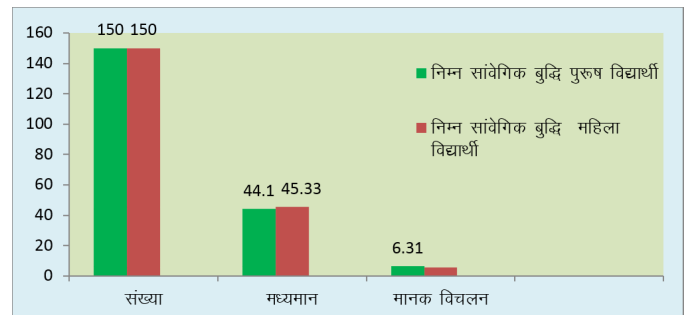
**आरेख संख्या– 1.7**
**निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की शिक्षण अभिक्षमता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख–**

**विश्लेषण एवं व्याख्याः**
प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.7 में निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला व पुरूष बी.एड. विद्यार्थियों में सम्बन्धी 'शिक्षण अभिक्षमता' पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला विद्यार्थी समूह का मध्यमान 45.33, मानक विचलन 5.64 तथा मानक त्रुटि 0.4605 पायी गयी है। निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले पुरूष विद्यार्थी समूह का मध्यमान 44.10, मानक विचलन 6.31 तथा मानक त्रुटि 0.5159 पायी गयी है। दोनों संकाय के समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य –2.087 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 298 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.97 से बहुत कम है जो अन्तर की सार्थकता की पुष्टि नही करता। अतः उपयुक्त परिकल्पना सामान्य रूप से स्वीकृत की जाती है।

परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले महिला व पुरूष सम्बन्धी 'शिक्षण अभिक्षमता' के प्रति ज्ञान महिला विद्यार्थियों में पुरूष वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में कम अन्तर पाया गया है क्योंकि महिला बी.एड. विद्यार्थी अपने अध्ययन संकाय में समावेश संदर्भित पाठ्यक्रम की अवधारणात्मक एवं संकल्पनात्मक तथ्यों का अध्ययन व चिन्तन द्वारा विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकती हैं तथा पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों में स्वयं के संवेगों का प्रबन्धन, स्व अभिप्रेरणा, परानुभूति तथा सम्बंध एवं व्यवहारों के प्रबन्धन की क्षमता अधिक देखने को मिलती है। जिससे उनके ज्ञान में संवेगात्मक रूप से अन्तर कम मिलता है।

**1.8 परिकल्पनाः**
उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

| उच्च सांवेगिक बुद्धि समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरूष बी.एड. विद्यार्थी | 150 | 280.10 | 21.97 | 1.794 | .067 | असार्थक | स्वीकृत |
| महिला बी.एड. विद्यार्थी | 150 | 280.29 | 23.84 | 1.947 | | | |

df–298 पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96

सारणी संख्या– 1.8
उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी–
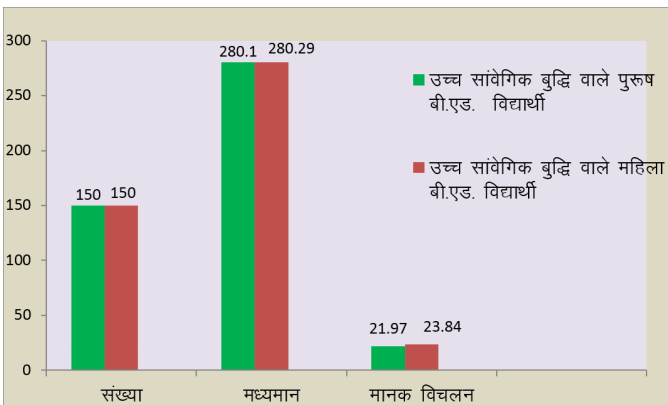
आरेख संख्या– 1.8
उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती आरेख–

**विश्लेषण एवं व्याख्याः**
प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.8 में उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता सम्बन्धी प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि पुरूष बी.एड. विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 280.10, मानक विचलन 21.97 तथा मानक त्रुटि 1.794 पायी गयी है। महिला बी.एड. विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 280.29, मानक विचलन 23.84 तथा मानक त्रुटि 1.947 पायी गयी है। दोनों संकाय के विद्यार्थियों के समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य .067 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 298 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.97 से काफी कम है जो अन्तर की सार्थकता की पुष्टि नहीं करता। अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

परिणाम स्वरूप कहा जा सकता है कि उच्च सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता के प्रति ज्ञान का महिला बी.एड. के विद्यार्थियों में पुरूष विद्यार्थियों की तुलना में समस्तरीय पाया गया है क्योंकि भाषा के सम्प्रेषण में शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के संदर्भ में सीखने–सिखाने की प्रकिया को आनन्ददायक बनाना आवश्यक है। इनके अनुसार निर्धारित समय में बच्चों में निर्धारित दक्षताऐं लाना आवश्यक है जिसके लिए दोनों वर्ग में समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए संरचनागत, साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सौंदर्यषास्त्रीय पक्षों को महत्व देने के कारण समस्तरीय ज्ञान पाया गया है। दोनों के ही शिक्षण विषय में समावेश भाषायी पाठ्यक्रम की अवधारणात्मक एवं संकल्पनात्मक विचारधाराओं का अध्ययन व चिन्तन द्वारा विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकते हैं। दोनों में समान रूचि होने के कारण जो अन्तर की सार्थकता को दृष्टीगत नहीं करता है। अतः भाषा दक्षता के प्रति ज्ञान दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में समान ज्ञान पाया गया है।

**1.9 परिकल्पनाः**
निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

| निम्न सांवेगिक बुद्धि समूह | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | मानक त्रुटि | टी–मूल्य | सार्थकता का अन्तर | निष्कर्ष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पुरूष बी.एड. विद्यार्थी | 150 | 248.56 | 21.098 | 0.283 | 0.925 | असार्थक | स्वीकृत |
| महिला बी.एड. विद्यार्थी | 150 | 246.32 | 21.329 | 0.279 | | | |

df–298 पर 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.96

सारणी संख्या– 1.9
निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर सांख्यिकीय दर्शाती सारणी–
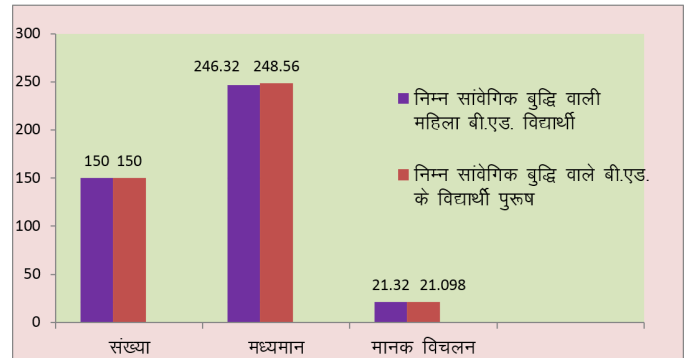
सारिणी संख्या– 1.9
निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता पर दर्शाती आरेख–

**विश्लेषण एवं व्याख्याः**
प्रस्तुत सारणी एवं आरेख संख्या 1.9 में निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले बी.एड. के विद्यार्थियों की भाषा दक्षता के विद्यार्थियों पर प्राप्तांकों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि महिला बी.एड. के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 246.32, मानक विचलन 21.329 तथा मानक त्रुटि 0.279 पायी गयी है। पुरूष बी.एड. के विद्यार्थियों के समूह का मध्यमान 248.56, मानक विचलन 21.098 तथा मानक त्रुटि 0.283 पायी गयी है दोनों संकाय के विद्यार्थियों के समूह का तुलनात्मक टी परीक्षण मूल्य 0.925 पाया गया है जो स्वतंत्रता के अंष 298 के 0.05 स्तर पर टी के अपेक्षित मूल्य 1.97 से बहुत कम है जो अन्तर की सार्थकता की पुष्टि नहीं करता है। अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

**1.13. परिणाम व निष्कर्षः**
**निष्कर्षः**
**प्रथम भागः** परिकल्पना संख्या 1.1 से 1.3 तक अवलोकन से ज्ञात होता है कि बी.एड़. महिला विद्यार्थी और बी.एड. पुरूष विद्यार्थियों के समूह के मध्यमानों में अधिक अंतर आना, बी.एड. विद्यार्थियों में आयु, अनुभव, योग्यता, क्षमता, दक्षता व पुरूष–प्रधान सामाजिक व्यवस्था एवं आर्थिक दायित्व, स्वतंत्र निर्णय सांस्कृतिक तथा राजनैतिक पृष्ठभूमि तथा सभी दृष्टीकोणों से अधिक सहभागिता होने से यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूह में निर्धारित विभिन्न आयामों में व्यावसायिक प्रतिबद्ध ता, शिक्षण अभिक्षमता एवं भाषा दक्षता' के ज्ञान में अंतर पाया गया है।

**द्वितीय भागः** परिकल्पना संख्या 1.4 से 1.9 तक की सारणी एवं आरेखीय के अध्ययन से आए हुए परिणामों से समग्र रूप में ज्ञात होता है कि महिला व पुरूष वर्ग के समूह के मध्यमानों में अधिक अंतर व कम अन्तर आना, जिसमें छात्रा में उनकी व्यावसायिक व रोजगार में कुशलता तथा शैक्षिक व सामाजिक विकास में नारी सषक्तीकरण व भाषायी कुशलता तथा शिक्षण अभिक्षमता के लिए उनमें संवेगात्मक विकास के लिए समान सकारात्मक सोच समान धारणा आषावादी, प्रगतिवादी, समग्रतावादी, भाषा समृद्धि के लिए वाचन व लेखन दक्षता के लिए अधिक जागरूक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व व व्यवस्था में एवं आर्थिक दायित्व, स्वतंत्र निर्णय सांस्कृतिक तथा राजनैतिक पृष्ठभूमि का पाठ्यक्रम एवं समानता

तथा स्वतंत्रता, राजनैतिक हस्तक्षेप में बढ़ता प्रतिषत आदि सभी दृष्टीकोणों से दोनों वर्ग की सहभागिता होने से यह स्पष्ट होता है कि दोनों समूह में निर्धारित विकास के विभिन्न आयामों सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक संचेतना व आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास रूपी घटकों के सुदृढ़ीकरण से दोनों समूह में ही समाहित पेषवर कुशलता, भाषायी कुशलता तथा शिक्षण अभिक्षमता के प्रति जागरूकता का ज्ञान समान व असमान पाया है पर उनमें अभी पूर्ण चेतना लाने के लिए निर्धारित नीति व पद्धति में जवाबदेही व पारदर्षिता लाने की आवश्यकता है।

**1.14. प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थः**

आज वैष्विक युग के बदलते परिदृष्य में मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का सांस्कृतिक, स्मरण और प्रगतिशील विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य है अर्थात कुछ क्षमताएँ व शक्तियाँ मानव में जन्म से ही पाई जाती हैं एवं उसका विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। अतः मानव के विकास के लिये क्षमताओंव जन्मजात शक्तियों का विकास करना चाहिए ताकि उसका सर्वांगीण विकास हो सके अर्थात शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सांस्कृतिक और सांवेगिक सभी प्रकार का समान रूप से विकास करना चाहिए।

शिक्षक के पूर्व अनुभव के आधार पर उसे स्वयं में हर तरह के वातावरण से सांमजस्य स्थापित करने की क्षमता का विकास करना होता है। तथा शिक्षा की प्रभावशीलता समाज और राष्ट्र में उसकी उपयोगिता उसके संवैधानिक व शैक्षिक सिद्धान्तों में सन्निहित है। अरस्तु ‘अध्यापक शिक्षा’ मानवीय व्यवहार सम्बंध की व्यवस्था है। इसे प्रभावषाली ढ़ंग से लागू कर उसके परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम हो सके। शोधकर्ता द्वारा किये गये गहन अध्ययन और शोध निष्कर्ष के अनुसार, वर्तमान अध्ययन शिक्षक और प्रशिक्षक, शैक्षिक योजनाकार और प्रषासन, नीति निर्माताओं और शिक्षकों का ध्यान आकर्षित करने के लिए उपयोगी रहेगा प्रस्तुत शोध अध्ययन से अध्यापन क्षमता, शिक्षण अभिक्षमता, भाषा दक्षता व व्यावसायिक प्रतिबद्धता और संवेगात्मक रूप से भावात्मक परिपक्वता के संदर्भ में प्रषिणार्थियों की क्रियात्मकता, भावात्मकता, और मानसिक व्यवहार को मूल्यांकन रूप में मदद मिलेगी। प्रत्येक शोधकर्ता द्वारा किये गये शोध कार्य को तब तक उपयोगी व सार्थक नहीं माना जा सकता जब तक कि यह शिक्षा के क्षेत्र में समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में उपयोगिता प्रस्तुत नहीं करता हो, प्रस्तुत अध्ययन में जो निष्कर्ष उभकर सामने आये उनकी शैक्षिक उपयोगिता को निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट किया जा सकता हैं।

- विद्यार्थियों की दृष्टी से।
- शिक्षकों की दृष्टी से।
- अभिभावक की दृष्टी से।
- विद्यालय प्रषासन की दृष्टी से।
- समाज की दृष्टी से।
- सरकार की दृष्टी से–
- अनुसंधान की दृष्टी से –
- उत्तम नागरिक बनाने में उपयोगी–
- शैक्षिक नीति निर्माताओं की दृष्टी से।

**1.15. भावी शोध हेतु सुझावः**

प्रत्येक समाज में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक गतिविधियां होती हैं जो समाज के सभी सदस्यों के बीच मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक विकास के नए पहलुओं को प्रकट करने के लिए शैक्षिक शोध की ओर ले जाती हैं ताकि समाज को ज्ञान के प्रकाश के साथ जागृत किया जा सके। शैक्षिक शोध हमारी सर्वोत्तम संभव कल्पना से परे दुनिया का पता लगाते हैं और समाज की विशिष्ट निपुण ाता के लिए शिक्षा प्रणाली के कामकाज को शामिल करते हैं। शैक्षिक निहितार्थ समाज में विभिन्न व्यक्तियों के बीच अंतःसम्बंध के साथ–साथ समाज के अभिजात वर्ग के लिए अलग–अलग पदों का पता लगाते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान मूल रूप से शोधकर्ताओं द्वारा ज्ञान के अस्तित्व के विभिन्न मापदंडों को प्रदान करने के लिए अपनाई गई एक पद्धति है। शैक्षिक अनुसंधान में शिक्षाशास्त्र, शिक्षक और शिक्षण शामिल हैं। शैक्षिक रणनीतिक शिक्षण की तकनीक, सीखने के परिण ामों के साथ–साथ शिक्षकों और छात्रों के व्यक्तित्व विकास और शिक्षण के दौरान कई मुद्दों को हल करने के लिए शिक्षकों के मार्ग को प्रबुद्ध करते हैं। इस नींव को बनाने में शिक्षक–शिक्षा तथा विद्यार्थी महत्वपूर्ण आयाम हैं। अतः स्वस्थ्य समाज एवं स्वावलम्बी राष्ट्र का निर्माण एवं कुषल शिक्षक निर्माण के लिए और विद्यार्थियों में विभिन्न पक्षों पर व्यवहार सीखना होगा।

**संदर्भ**

1. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अल्का (2013), अनुसन्धान संदर्षिका सम्प्रत्यय कार्यविधि ायॉ, प्रविधियॉ षारदा पुस्तक भवन इलाहबाद ।
2. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अल्का (2010), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, षारदा पुस्तक भवन इलाहबाद ।
3. श्रीवास्तव डी.एन (2009), अनुसंधान विधियां, आगरा साहित्य प्रकाशन, आगरा ।
4. श्रीवास्तव डी.एन (2005),व्यक्तित्व का मनोविज्ञान,विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
5. प्रसाद लोकेश के. (2010),अनुसंधान पद्धति शास्त्र ,कोठारी बुक्स, नई दिल्ली ।
6. डॉ विपिन अस्थाना (2011), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी,विकास पब्लिकेशन, नई दिल्ली ।
7. शर्मा,आर.के.(2011),शिक्षा तथा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, साहित्य प्रकाशन, आगरा ।
8. अस्थाना विपिन (2015), शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन।
9. वर्मा जी एस (2012), शिक्षक एवं शिक्षक तकनीकी, रॉयल बुक डिपो।
10. जी एन शर्मा 2020), अध्यापक शिक्षा, नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
11. एन.सी. एफ. (2005), नई दिल्ली, शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।
12. अंजलि युलु (1977) शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि तथा शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन, आंध्र प्रदेश विश्वविद्यालय।
13. अमरीक सिंह (1990), ऑन बीइंग अ टीचर, नई दिल्ली कोणार्क।
14. एंडरसन लॉरेंस (2012), इन्क्रिसिंग टीचर इफेक्टिवनेस, सस एडिशन, पेरिस, यूनेस्को